

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 5: नन्द और वसुदेव का मिलन

14 September 2026



नन्द और यशोदा के यहाँ पुत्र-जन्म पर गोकुल आनन्द से भर उठता है — गोप और गोपियाँ गाते, नाचते, और एक-दूसरे पर मक्खन तथा हल्दी की वर्षा करते हैं, यह न जानते हुए कि स्वयं विश्व के स्वामी उनके बीच निवास करने आ गए हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विङ्गडम् में पुनः आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। कंस के कारागार के अन्धकार तथा उसके क्रूर संकल्प के पश्चात्, यह पंचम अध्याय शुद्ध प्रकाश और आनन्द में खुलता है। गोकुल में गोप-प्रमुख नन्द अपने पुत्र के जन्म को पावन जन्म-संस्कारों, असीम दान, संगीत तथा उत्सव के साथ मनाते हैं; सम्पूर्ण ब्रज-ग्राम सजाया जाता है और गोप-गोपियाँ आनन्द से छलक उठते हैं। उस दिन से नन्द का ब्रज समृद्धि का ही आवास बन जाता है, लक्ष्मी देवी का क्रीड़ास्थल, क्योंकि विश्व के स्वामी वहाँ निवास करने आ गए हैं। बाद में, जब नन्द अपना वार्षिक कर चुकाने मथुरा जाते हैं, तब उनके प्रिय मित्र वसुदेव उनसे मिलते हैं, और दोनों अपने पुत्रों, विधि के मार्गों, तथा उस मौन चेतावनी पर एक कोमल संवाद करते हैं जो नन्द को शीघ्र घर लौटा देती है।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण

- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)
- अध्याय: 5 (पंचम अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: नन्द और वसुदेव का मिलन
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित से कहते हुए); और आगे सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य के ऋषियों से कहा गया
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित (शुकदेव की कथा के भीतर); नैमिषारण्य में एकत्र ऋषिगण
- मुख्य स्थल: ब्रज में गोकुल नामक गोप-ग्राम; तथा मथुरा के समीप नन्द का पड़ाव
- केन्द्रीय विषय: गोकुल में भगवान् श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव, ब्रज की समृद्धि, तथा नन्द और वसुदेव का मिलन
- मुख्य श्लोक-परिधि: स्कन्ध 10, अध्याय 5, श्लोक 1–32
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

चतुर्थ अध्याय में वह दिव्य कन्या कंस की पकड़ से फिसलकर आठ भुजाओं वाली देवी के रूप में उठ गई, यह घोषणा करते हुए कि उसका संहारक पहले ही जन्म ले चुका है। पश्चात्ताप से व्याकुल कंस ने वसुदेव और देवकी को मुक्त कर दिया और उन्हें शाश्वत आत्मा का उपदेश तक दिया, किन्तु उसके दैत्य मन्त्रियों ने शीघ्र ही उसे पुनः क्रूरता की ओर मोड़ दिया, और उसने साधुजनों का उत्पीड़न आरम्भ करा दिया। इस बीच, कंस से अनजान, भगवान् गोकुल में यशोदा की शय्या पर सुरक्षित विराजमान थे। यह अध्याय पूर्णतः ब्रज के आनन्द की ओर मुड़ जाता है।

नन्द पावन जन्म-संस्कार सम्पन्न कराते हैं

अपनी वृद्धावस्था में पुत्र का जन्म होने पर अत्यन्त आनन्दित होकर, उदारात्मा नन्द ने स्नान किया, स्वयं को पवित्र किया, और सुन्दर आभूषण धारण किए। उन्होंने भविष्य-कथन में निपुण ब्राह्मणों को बुलाया, उनसे मंगल-सूक्तों का पाठ कराया, और शिशु के लिए विधिपूर्वक जातकर्म — पावन जन्म-संस्कार — सम्पन्न कराया, तथा शास्त्रोक्त रीति से पितरों और देवताओं की पूजा की।



आनन्दित नन्द शिशु के लिए पावन जातकर्म जन्म-संस्कार सम्पन्न कराते हैं और ब्राह्मणों को उदार दान देते हैं (श्लोक 1-4)।

अपनी कृतज्ञता में नन्द ने ब्राह्मणों को दो लाख सुसज्जित, नवप्रसूता गौएँ, तथा रत्नजटित और वस्त्र से ढँके तिलों के सात पर्वत-सदृश ढेर दान किए। श्रीशुकदेव यहाँ ऐसी समस्त शुद्धि के विषय में एक मौन सत्य का उपदेश देते हैं।

कालेन स्नानशौचाभ्यां संस्कारैस्तपसेज्यया । शुध्यन्ति दानैः सन्तुष्टया द्रव्याण्यात्मात्मविद्यया ॥ ४ ॥

kālena snāna-śaucābhyāṁ saṁskārais tapasejyayā śudhyanti dānaiḥ santuṣṭyā dravyāṇy ātmātma-vidyayā

अर्थ: भौतिक वस्तुएँ समय के साथ, स्नान तथा शौच से, संस्कारों, तप, यज्ञ, दान तथा सन्तोष से शुद्ध होती हैं; किन्तु आत्मा केवल आत्मज्ञान से ही शुद्ध होता है। (स्कन्ध 10, अध्याय 5, श्लोक 4)

ब्राह्मणों, सूतों, मागधों तथा वन्दीजनों ने मंगल-वचन कहे, गायक गाने लगे, और नगाड़े तथा बड़े ढोल बार-बार बज उठे।

सम्पूर्ण व्रज आनन्दित होता है

ग्राम उत्सव के लिए तैयार हुआ। इसके द्वार, आँगन तथा घर स्वच्छ बुहारे और जल से सींचे गए, अनेक रंगों की ध्वजाओं-पताकाओं तथा मालाओं, वस्त्रों और पत्तों के तोरणों से सजाए गए। गौएँ, बैल तथा बड़े बछड़े हल्दी-मिश्रित तेल से लीपे गए, रंग-बिरंगे खनिजों से चित्रित किए गए, और मोरपंखों, मालाओं, वस्त्र तथा स्वर्ण-हारों से सजाए गए। बहुमूल्य वस्त्र तथा पगड़ी पहने और मूल्यवान रत्न धारण किए गोपजन नाना प्रकार के उपहार लिए नन्द के घर उमड़ पड़े।



सम्पूर्ण ब्रज ध्वजाओं और मालाओं से सजा है जब गोप-गोपियाँ उपहार लाते, गाते और शिशु के जन्म पर आनन्दित होते हैं (श्लोक 6-13)।

यशोदा के यहाँ पुत्र-जन्म का समाचार सुनकर आनन्दित गोपियाँ भी स्वयं को सँवारकर अपने उपहार लिए नन्द के घर की ओर शीघ्रता से चल पड़ीं, उनके मुख ताज़े केसर से दमक रहे थे, उनके आभूषण झूल रहे थे और मार्ग में उनकी वेणियों से पुष्प गिरते जाते थे। शिशु पर आशीर्वाद बरसाते हुए — “भगवान् इस शिशु की चिरकाल तक रक्षा करें!” — और एक-दूसरे पर हल्दी-तेल मिश्रित जल छिड़कते हुए, वे आनन्द में उच्च स्वर में गाने लगीं।

अवाद्यन्त विचित्राणि वादित्राणि महोत्सवे । कृष्णे विश्वेश्वरेऽनन्ते नन्दस्य ब्रजमागते ॥ १३ ॥

avādyanta vicitrāṇi vāditrāṇi mahotsave kṛṣṇe viśveśvare 'nante nandasya vrajam āgate

अर्थ: अब जब अनन्त भगवान् कृष्ण, विश्व के स्वामी, नन्द के ब्रज में आ गए थे, तब उस महान् उत्सव पर नाना प्रकार के अद्भुत वाद्य बज उठे। (स्कन्ध 10, अध्याय 5, श्लोक 13)

अपने उल्लास में गोपजन एक-दूसरे पर दही, दूध तथा घी छिड़कने लगे, एक-दूसरे को मुट्ठी भर ताज़े मक्खन से लीपने लगे, और परस्पर एक-दूसरे को उछालने लगे। भगवान् विष्णु को प्रसन्न करने तथा अपने पुत्र के कल्याण के लिए उदार नन्द ने सूतों, मागधों, वन्दीजनों तथा अपनी कला से जीविका चलाने वाले सभी को वस्त्र, आभूषण तथा गोधन प्रदान किए, और प्रत्येक को उसकी इच्छानुसार सम्मानित किया। नन्द से सम्मानित होकर रोहिणी भी सुन्दर वस्त्रों तथा मालाओं से सजी हुई नन्द के घर की सम्मानित स्वामिनी के रूप में विचरण करने लगीं।

ब्रज लक्ष्मी का आवास बन जाता है

श्रीशुकदेव हमें बताते हैं कि उस दिन से भगवान् की उपस्थिति ने स्वयं ब्रज के स्वरूप को रूपान्तरित कर दिया।

तत आरभ्य नन्दस्य ब्रजः सर्वसमृद्धिमान् । हरेर्निवासात्मगुणै रमाक्रीडमभून्नृप ॥ १८ ॥

*tata ārabhya nandasya vrajaḥ sarva-saṁṛddhimān harer nivāsātma-guṇai ramākṛīḍam abhūn
nrpa*

अर्थ: हे राजन्, उस समय से नन्द का व्रज, भगवान् हरि के आवास के स्वाभाविक गुणों से समस्त प्रकार की समृद्धि से युक्त होकर, लक्ष्मी देवी का ही क्रीड़ास्थल बन गया। (स्कन्ध 10, अध्याय 5, श्लोक 18)

नन्द और वसुदेव का मिलन

समय पाकर, गोकुल की रक्षा का भार गोपों को सौंपकर, नन्द अपना वार्षिक कर कंस को चुकाने मथुरा गए। जब वसुदेव को ज्ञात हुआ कि उनके मित्र आए हैं और कर चुका चुके हैं, तब वे उनसे मिलने और अपने पुत्रों का समाचार पूछने नन्द के पड़ाव पर गए। अपने प्रिय मित्र को देखकर आनन्दित होकर, नन्द अपने पैरों पर उठ खड़े हुए — जैसे चेतना लौटने पर देह जाग उठती है — और स्नेह से अभिभूत होकर वसुदेव को अपनी बाँहों में भर लिया। स्वागत और आसन पाकर, वसुदेव, जिनका हृदय अपने छिपे हुए पुत्रों की ओर खिंचा था, कहने लगे।



मथुरा में नन्द उठकर अपने प्रिय मित्र वसुदेव का आलिंगन करते हैं, जो कोमलता से उनके पुत्रों का समाचार पूछते हैं (श्लोक 20-28)।

उन्होंने नन्द को बधाई दी कि वृद्धावस्था में, जब सन्तान की समस्त आशा समाप्त-सी हो चुकी थी, अन्ततः उन्हें सन्तान प्राप्त हुई, और कहा कि इतने प्रिय मित्र को देखना पुनर्जन्म पाए किसी व्यक्ति से मिलने के समान है, क्योंकि इस संसार में प्रियजन का दर्शन दुर्लभ है। अपने-अपने कर्तव्यों में लगे मित्र, उन्होंने चिन्तन किया, नदी की धारा में बहते काठ के तख्तों के समान सदैव साथ नहीं रह सकते। उन्होंने पूछा कि क्या गोकुल स्वस्थ है और जल तथा घास से सम्पन्न है, और क्या उनका अपना पुत्र — बलराम, नन्द और रोहिणी का लाड़ला — उनकी देखरेख में फल-फूल रहा है। धर्म, अर्थ और काम का त्रिवर्ग, उन्होंने जोड़ा, तभी सार्थक है जब वह अपने प्रियजनों के साथ बाँटा जाए; जब वे दुख में हों, तब ये वस्तुएँ सच्चा सुख नहीं देती।

नन्द ने कोमलता से अपने मित्र को उस सब का स्मरण कराया जो देवकी ने सहा था — कि वसुदेव के अनेक पुत्र कंस द्वारा मारे गए, और अन्त में जन्मी एकमात्र कन्या स्वर्ग को उठ गई। फिर उन्होंने मौन ज्ञान का एक वचन कहा।

नूनं ह्यदृष्टनिष्ठोऽयमदृष्टपरमो जनः । अदृष्टमात्मनस्तत्त्वं यो वेद न स मुह्यति ॥ ३० ॥

nūnam hy adṛṣṭa-niṣṭho 'yam adṛṣṭa-paramo janaḥ adṛṣṭam ātmanas tattvaṁ yo veda na sa muhyati

अर्थ: निश्चय ही प्रत्येक प्राणी अदृष्ट पर आश्रित है और अदृष्ट से ही नियन्त्रित है; जो इस अदृष्ट विधि को ही आत्मा का तत्त्व जान लेता है, वह कभी मोहित नहीं होता। (स्कन्ध 10, अध्याय 5, श्लोक 30)

वसुदेव ने, संकट का आभास पाकर, अपने मित्र से आग्रह किया कि वे न ठहरें: कर चुका दिया गया है और वे मिल चुके हैं, किन्तु गोकुल में विचित्र और भयावह घटनाएँ घट रही हैं, और नन्द को विलम्ब किए बिना लौट जाना चाहिए। इस प्रकार परामर्श पाकर, नन्द ने विदा ली और, अन्य गोपों के साथ, अपनी बैलगाड़ियों पर सवार होकर गोकुल लौट चले।



वसुदेव द्वारा गोकुल में संकटों की चेतावनी पाकर नन्द और गोपजन अपनी बैलगाड़ियों पर घर लौटते हैं (श्लोक 31-32)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान् की उपस्थिति किसी स्थान को समृद्धि का आवास बना देती है। जिस दिन से कृष्ण व्रज में आते हैं, वह लक्ष्मी देवी का क्रीड़ास्थल बन जाता है। जहाँ भगवान् का स्वागत होता है, वहाँ सच्ची समृद्धि और मंगल का अनुसरण होता है (श्लोक 18)।
2. बाहरी शुद्धि भीतरी शुद्धि के समान नहीं। जल, कर्मकाण्ड, तप और दान भौतिक वस्तुओं को शुद्ध करते हैं, किन्तु आत्मा केवल आत्मज्ञान से शुद्ध होता है। भक्ति और ज्ञान, न कि केवल कर्मकाण्ड, हृदय को शुद्ध करते हैं (श्लोक 4)।
3. समुदाय में बाँटा गया आनन्द भी उपासना का एक रूप है। सम्पूर्ण व्रज एक साथ आनन्दित होता है — पुरुष, स्त्रियाँ, गौएँ और बालक — अपना सुख भगवान् को अर्पित करते हुए। सरल, पूर्ण-हृदय उत्सव स्वयं भक्ति का एक कार्य हो सकता है (श्लोक 5-16)।

4. भक्तों के बीच प्रेम अमूल्य तथा क्षणभंगुर है। नन्द के प्रति वसुदेव के कोमल वचन हमें स्मरण कराते हैं कि प्रियजनों का संग कितना दुर्लभ और प्रिय है, और उसे जब तक मिले, कितनी कृतज्ञता से ग्रहण करना चाहिए (श्लोक 23-25)।

5. मोह से मुक्ति विधि के अदृष्ट हाथ को स्वीकार करने से आती है। शोक के समक्ष नन्द की शान्ति उनके इस विश्वास से बहती है कि समस्त प्राणी विधि पर आश्रित हैं। इसे जानकर, ज्ञानी शोक से अभिभूत नहीं होते (श्लोक 30)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

इस अध्याय में एक सुन्दर निर्दोषता है। सम्पूर्ण ब्रज नाचता-गाता है, मक्खन और हल्दी उछालता है, एक नवजात शिशु को आशीर्वाद देता है — और उनमें से कोई नहीं जानता कि वे समस्त लोकों के स्वामी के अवतरण का उत्सव मना रहे हैं। उनका आनन्द गणना-रहित है; वह मात्र सरल हृदयों की छलकती प्रसन्नता है, और ठीक इसी में भगवान् जन्म लेना चुनते हैं। इस बीच, मथुरा में, दो वृद्ध मित्र आलिंगन करते हैं और अपने बच्चों तथा अपने दुखों की धीमी बातें करते हैं, ऐसे रहस्य ढोते हुए जिन्हें वे बाँट नहीं सकते। यह अध्याय दोनों को एक साथ धारण करता है: निष्कलंक उत्सव और मौन, छिपा हुआ शोक। सम्भवतः इसी प्रकार भगवान् प्रायः हमारे जीवन में प्रवेश करते हैं — गर्जना के साथ नहीं, अपितु हमारे उत्सवों और विछोहों, हमारे हर्ष और हमारी अनकही चिन्ताओं के साधारण क्रम में। वहीं, दैनिक जीवन के सरल हर्षों और भारों में, उनका स्वागत करना ही वह भक्ति है जो यह अध्याय कोमलता से सिखाता है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, किसी एक साधारण आनन्द को अर्पण बनने दें। चाहे वह साझा भोजन हो, संगीत का कोई क्षण हो, अथवा किसी प्रियजन का अभिवादन — रुककर उस हर्ष को मौन रूप से भगवान् को समर्पित करें, जैसे ब्रज के गोपजनों ने अनजाने अपना उत्सव उन्हीं को समर्पित किया। अपने सुख को ही एक छोटी उपासना बनने दें। आरम्भ करते समय जपें: “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।”

उपसंहार

दशम स्कन्ध का पंचम अध्याय हमें कंस के दरबार की छायाओं से उठाकर गोकुल के सूर्यालोकित आनन्द में ले आता है। नन्द पावन जन्म-संस्कार सम्पन्न कराते हैं और दान की धारा बहाते हैं; सम्पूर्ण ब्रज सजता और आनन्दित होता है; और अनन्त भगवान् के आगमन से नन्द का ग्राम समस्त समृद्धि का आवास बन जाता है। मथुरा जाकर नन्द अपने प्रिय मित्र वसुदेव से मिलते हैं, और उनका कोमल संवाद प्रेम, तड़प, तथा विधि को स्वीकार करने के ज्ञान को एक साथ बुन देता है, इससे पूर्व कि वसुदेव उन्हें अदृष्ट संकटों से सावधान रहने को चुपचाप घर भेज दें। समस्त उत्सव के नीचे एक गहन रहस्य छिपा है जिसे केवल कुछ ही जानते हैं: गोकुल का वह शिशु स्वयं भगवान् है। आने वाले अध्यायों में, वह छिपी हुई दिव्यता बाल्यकाल की अद्भुत लीलाओं के माध्यम से प्रकाशित होने लगेगी।

श्रीमद्भागवतम् का यह दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ तथा आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध), पंचम अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञान • बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी और लिप्यन्तरण में दिए गए हैं तथा उनके अर्थ सारांश रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक द्वारा किसी सम्बद्धता अथवा समर्थन का कोई संकेत अभिप्रेत नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-5-meeting-of-nanda-and-vasudeva-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञान • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

